यीशु और सामरी स्त्री (यूहन्ना : ४)
१२८

"यीशु के पास जीवन का पानी है"

नगर के बहुत से लोग नियमित रूप से उस के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते थे |
सामरी स्त्री : "वे अपनी उंगली मेरी ओर उठाते हैं | मानो उन के जीवन में सब कुछ ठीक है | मैं आशा करती हूँ कि जब मैं कूएँ पर पानी लेने जाऊं तब वहाँ किसी से न मिलूँ |" *(पत्थर के मार्ग पर चलने की आवाज)*
दोपहर के १२ बजे उस स्त्री ने अपना पानी का घड़ा लिया और नगर से चली गई | दिन के इस समय जब धूप बहुत तेज होती है, उसे मार्ग पर शायद ही कोई मिला हो | सूखार नगर के लोग सामान्यता या तो सवेरे या शाम को कुएँ पर जाते थे |
सामरी स्त्री : "ओह प्रिय, कूएँ पर न जाने कौन बैठा हुआ है ?"
यीशु : "मुझे पीने को कुछ दो |"
सामरी स्त्री : "आप मुझ से बात क्यों कर रहे हो ? आप यहूदी हैं और मैं एक सामरी स्त्री हूँ |"
क्या अपरिचित लोग नहीं जानते कि यहूदी, सामरियों से किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते कयोंकि उन्हों ने परदेसियों से विवाह किया और मूर्तियों को पूजा ? यधपि आप यह जानते थे | परन्तु आप उन लोगों से दूर न रहते थे जिन्हें समाज ने त्याग दिया था | आप ऐसा नहीं करते | यीशु दूसरों से अलग व्यक्ति हैं |
यीशु : "यदि तू जानती कि मैं कौन हूँ तो तू मुझ से माँगती और मैं तुझे जीवन का पानी देता |"
सामरी स्त्री : "आप पानी कैसे निकाल सकोगे ? कुआँ गहरा है |"
यीशु : "जो कोई यह पानी पियेगा वह फिर प्यासा होगा | परन्तु जो पानी मैं दूँगा वह अनन्त काल तक तुम्हारी प्यास मिटायेगा |"

हमारे दिल की इच्छायें प्यासा होने के समान होती हैं | एक बार वह पूरी हो गईं कि नई इच्छायें प्रगट हो जाती हैं और यह सिलसिला जारी रहता है | दिल कभी सन्तुष्ट नहीं होता | यह प्यास कभी नहीं बुझती | न ही महान अनुभव, और न कोई खेल का पुरस्कार, न कोई अच्छा मित्र या कोई और वस्तु इस प्यास को बुझा सकती है | जीवन की इस प्यास को वही बुझा सकता है जो कुएँ पर बैठा हुआ था | उस स्त्री को इस का एहसास हुआ था |
सामरी स्त्री : "मुझे यह पानी दीजिये, ताकि मुझे फिर कभी कुएँ पर न आना पड़े |"
यीशु : "जा, अपने पती को ले कर आ |"
सामरी स्त्री : "मेरा विवाह नहीं हुआ है |"
यीशु : " मैं जानता हूँ | तेरे पाँच पती हो चुके हैं और जिस पुरुष के साथ तू अब रहती है वह पुरुष भी तेरा पती नहीं है |"
यीशु इस स्त्री के विषय में सब कुछ जानते थे | और फिर भी आप ने उस से मुँह न मोड़ा |
सामरी स्त्री : "परमेश्वर ने आप को भेजा | मैं जानती हूँ कि उद्धार कर्ता आने वाला है |"
यीशु : "मैं वही हूँ |"
यीशु ने उस के पाप क्षमा किये और उसे नया संतुष्ट जीवन दिया | बहुत ही प्रसन्न हो कर वह स्त्री अपना पानी का घड़ा छोड कर दौड़ती हुई नगर को वापस लौटी |
उस ने सब लोगों को यीशु के पास आने का नेवता दिया |
और मैं तुम को नेवता देता हूँ कि यीशु के पास आओ | तब तुम भी वही कहोगे जो सूखार नगर के लोगों ने कहा था :
बालक : "अब मैं यीशु पर विश्वास करता हूँ | परन्तु इस लिये नहीं कि तुम ने कहा, बल्कि इस लिये कि मैं स्वयं : आप को जान गया हूँ | आप सच में दुनिया के उद्धार कर्ता हैं |"

लोग : वर्णनकर्ता, सामरी स्त्री, यीशु, बालक

© Copyright: CEF Germany © कॉपीराईट: सी इ एफ जरमनी